IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चेतना

Anita M. Rathva
Ph.D. Research Scholar
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan, Gujarat, India

प्रस्तावना:

प्राचीन काल में भारत में नारीयों की स्थिति बहुत ही सम्मानपूर्ण थी। उन्हें पूजनीय शक्ति के रूप में पुरुष वर्ग सम्मान देता था। यही कारण है की वेदों में और अन्य आर्ष ग्रंथों में नारी के लिए कहीं पर भी ऐसा कोई एक शब्द भी नहीं लिया गया, ऋषि-मनीषियों ने अपने-अपने ग्रंथों में उसकी गरिमा और महिमा को सम्मानित करने के पक्ष में अनेकों श्लोकों की रचना की। जिससे भारत वर्ष में दीर्घकाल तक नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा। नारी को पुरुष वर्ग ने सम्मान का स्थान दिया और उसे बराबरी के मौलिक अधिकार प्रदान कर उसके व्यक्तित्व के विकास में पुरुष वर्ग स्वयं भी सहायक बना। यही कारण है की हमारे यहाँ अपाला, घोषा, सावित्री, सीता, कौशल्या, गार्गी, मैत्रेयी आदि जैसी अनेको विदुषी सन्नारियों ने जन्म लिया।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।"

"जिस कुल में नारीयों की पूजा अर्थात सत्कार होता है उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते है और जिस कुल में नारीयों की पूजा नहीं होती, वहां मानो उनकी सब क्रिया निष्फल है।"

फिर धीरे धीरे पतन की वह अवस्था आई जब नारी को भारत में लोगों ने 'पैरों की जूती' माना और जब चाहा पैरों की जूती की भांति उन्हें बदल कर दूसरी जूती पहन ली। बस, उसी सोच ने भारत की नारी को पतितावस्था में पहुँचा दिया। नारी के प्रति पुरुष वर्ग की ऐसी घृणित और अमानवीय सोच ने न केवल नारी का शोषण किया, अपितु समाज भी इससे पिछड़ने की अवस्था में पहुँचता चला गया। क्योंकि जब माताएं स्वयं अशिक्षित, अनपढ़ और गंवार होगी तो संतान का वैसा बनना स्वाभाविक है। नारी को इस नारकीय जीवन से उगारने में राजा राममोहनराय, महर्षि दयानंद जैसे अनेकों समाज सेवियों व समाज सुधारकों के क्रांतिकारी आंदोलनों ने विशेष भूमिका निभाई। इसी का परिणाम है की आधुनिक भारत में महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं।

भारत में महिलाएँ अब सभी प्रकार की गति विधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मिडिया, कला और संस्कृति, सेवा, क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौधोगिकी आदि में भाग ले रही है। इंदिरा गाँधी जिन्होंने कुल मिलाकर पंद्रह वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की, विश्व की सबसे लम्बे समय तक सेवारत महिला प्रधानमंत्री है। इसी प्रकार भारत की पहली महिला राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य प्रतिभा देवी सिंह पाटिल को मिलता है, जो अपने समय में कई प्रमुख पदों पर रही। इतना सबकुछ होने के उपरांत भी भारत में तलाक जैसी कुप्रथा जहाँ मुस्लिम नारीयों के लिए जी का जंजाल बनी रही है, वहीं हिन्दू नारी के लिए भी कम चुनौतियाँ नहीं हैं। वह भी पुरुष वर्ग के उत्पीड़न का शिकार हैं। घरेलू हिंसा को आज भी देहाती नारी बहुत अधिक झेलती है। नारीयों को सारा दिन परिश्रम करना पड़ता है। दूरदराज के क्षेत्रों में ऐसी स्थितियाँ हैं। जहाँ पर नारीयों को सारा दिन काम करवाया जाता है और पुरुष वर्ग आराम से ताश खेलता है। नारीयों की समस्याओं को सुलझाने के लिए भारत में प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति को फिर से स्थापित किया जाए। गुरुकुल शिक्षा को लागूं कर संस्कार आधारित शिक्षा को देश

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। इससें नारीयों के प्रति सम्मान का भाव विद्यालय में अध्ययनरत बच्चों के भीतर जब पैदा होगा तो वही बच्चे जब समाज में आएँगे तो नारीयों के प्रति स्वाभाविक रूप से सम्मान भाव रखने वालें होंगें। शिक्षा को रोजगार से तो जोड़ा ही जाएँ साथ ही संस्कारों से भी जोड़ा जाएँ तभी हम नारीयों के प्रति सम्मान का भाव अपना सकेंगे।

भारत की वर्तमान समस्याओं को सुलझाने के लिए पुरुष को सुसंस्कृत बनाया जाए। साथ ही नारीयों को भी मर्यादित और संतुलित भूमिका निभाने के लिए स्वयं आगे आना चाहिए। एक गंभीर, सुशिक्षित और सुसंस्कृत नारी अपने आपको 'बाजार की वस्तु' नहीं बनाती और न ही वह नाचने और गाने वाली बनती है। वह जानती है कि उसे देश और समाज को सही दिशा देनी है। जिसके लिए उसे गंभीर और बहुत ही मर्यादित भूमिका का निर्वाह करना चाहिए।

नारी चेतना सिर्फ एक चेतना भर नहीं, बल्कि देश की आधी आबादी के संघर्षमय जीवन को समेटने की कोशिश है। यह चेतना इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके हाशिये पर जिंदगी गुजार रही नारीयों के जीवन को पहली बार केन्द्रीयता प्रदान की। यह चेतना नारीयों की स्वतंत्रता और उनके संघर्ष को रेखांकित कर देह मुक्ति से लेकर आत्ममुक्ति के सारे जरुरी सवालों को उठाता है। पारम्परिक संदर्भों में सिर्फ एक देह के रूप में देखी गयी नारी को हमेशां उसकी पहचान से दूर रखा गया है। अपने जन्म के साथ ही उन्हें जिन गतानुगतिक स्थितियों में रखा जाता है। वे हमेशां उसे सिर्फ अस्तित्वहीन सिद्ध करते हैं। मजे की बात है कि पारम्परिक तौर पर नारीयों के मुक्ति की जिस अवधारणा का निर्णय किया भी गया वे हमेशां संदिग्ध रहे और उनका उपयोग उसके विरुद्ध ही किया गया। समाज नारी के लिए एक निश्चित नियमावली तैयार करता है। जिसके अनुसार ही उसका सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हो जाता है यदि कोई नारी इस नियमावली का उल्लंघन करती है तो वह समाज द्वारा पीड़ित और प्रताड़ित की जाती है। समाज अपने शब्द बाणों से उसे घायल करता है, इसलिए इस पितृसत्तात्मक समाज में नारीयों का जीवन सिर्फ दासता ही स्वीकार करता है और यही कारण है कि नारी इस पुरुष प्रधान समाज में न केवल अपना अस्तित्व खो देती है, बल्कि आधी आबादी की अस्मिता को भी मिटा देती है इस विचारात्मक तथ्य को प्रकाशमान करने के लिए साहित्य ने पहल की और कथा साहित्य में नारी चेतना का उदय हुआ।

साहित्य का संसार विशाल है। इसमें लेखकों द्वारा सदैव ही अनुसन्धान किये जाते रहे हैं। समाज और उसकी व्यवस्था सदैव ही लेखकों के विषय रहें हैं। भारतीय साहित्य और कला में नारी के अनेक रूप मिलते हैं कुछ रूपों में वह सौंदर्य और भोग की वस्तु रही है तो कुछ रूपों में वह दासता की जंजीरों में जकड़ी सिर्फ एक देह रही है। आज के साहित्य में नारी के प्रति लेखक का नजरिया कुछ बदला है, नारी जिसे कभी मनुष्य की श्रेणी में नहीं रखा गया था आज लेखक उसे आधी आबादी का दर्जा दिलाने और मनुष्यता की श्रेणी में रखने की माँग कर रहे हैं। नारी के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए और उसकी पहचान को एक रूप देने के लिए हिंदी साहित्य में नारी चेतना की आवश्यकता महसूस हुई।

हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना का उदय नारी स्वतंत्रता की एक मजबूत पहल है। स्वतंत्रता पूर्व के उपन्यासों में किसानों के बाद नारी समस्याओं को ही प्रमुख स्थान मिला है। इसका प्रमुख कारण उपन्यासकारों का नवजागरण की चेतना से प्रभावित होना था, किन्तु उस समय के उपन्यासकारों ने परंपरागत नारी संहिता के चौखटे में ही नारी उद्धार की बात की और नारी के लिए उस घेरे से बाहर निकलने का कोई द्वार नहीं सुझाया। प्रेमचंद युग के उपन्यासों के नारी पात्रों में एक नई शक्ति की संभावना अवश्य ही दिखाई देती है। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की दिशा में अग्रसर हैं और समाज को नई दिशा देने के लिए प्रस्तुत है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

मूलतः इस समाज में नारी कि न अपनी कोई जाति है न ही नाम है और वह बेटी, पत्नी और माँ के रूप में अपने को पाती है। स्मरण और विचारों के इस संसार में पुरुष वर्ग की स्थापना एक व्यक्ति के रूप में हुयी और इस महज एक आकस्मिक घटना के रूप में स्वीकार किया गया। व्यक्ति के रूप में पुरुष सम्पूर्ण है और नारी तो बस अन्या है।

भारतीय समाज सदियों से एक मुकबल भाषा के अभाव में काफी हद तक सांस्कृतिक रूप में पिछड़ा रहा है लेकिन अब धीरे-धीरे इस सांस्कृतिक हीनता से वह मुक्त हो रहा है, खासकर भारतीय नारी में अब एक अभूतपूर्व साहस का विकास हो रहा है। घर परिवार की दुनिया में इस कदर खो गयी थी कि उसे अपनी सुधि नहीं थी परन्तु वह अब अपनी अस्मिता की पहचान के लिए प्रयासरत है। निश्चय ही अब वह दिन दूर नहीं जब नारी की अपनी पहचान होगी। "आज नारी चाहे घरेलू हो, चाहे नौकरी पेशा उसे वह सब अधिकार प्राप्त हैं जो पुरूषों को हैं, फर्क इन अधिकारों को जानने और अपनाने का। आज नारी इतनी डरपोक और अनपढ़ नहीं रही कि वह घर की चाहरदीवारी में बंद होकर ही रह जाय।"

आधुनिक काल में नारी केवल रमणी या भार्या नहीं वरना घर और बाहर के समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं उसका विकास तभी संभव है जब वह पूरी तरह सक्षम हो और नौकरी के नाम पर उसका शोषण न किया जाए, अक्सर नारीयाँ जो काम करती हैं वे अनदेखे कर दिये जाते हैं और उन कार्यों का मूल्य केवल सेवा भाव माना जाता हैं। यहाँ एक पंक्ति लिखी है जहाँ नारी चरित्र को उजागर किया गया है,

"अच्छी तरह याद रखना,
तुम जब घर की चौखट लाघोंगी,
लोग तुम्हे टेढ़ी-मेढ़ी नजरों से देखेंगे।
जब तुम गली से होकर गुजरोगी,
लोग तुम्हारा पीछा करेंगे, सीटी बजाएँगें,
जब तुम गली पार करके मुख्य सड़क पर पहुँचोगी,
लोग तुम्हे चरित्रहीन कहकर गालियाँ देंगे।

उपन्यासों में नारी चेतना:

आज की महिला लेखिकाएँ एक मुक्ति योद्धा हैं। मनुष्य की मुक्ति के लिए संघर्षरत ये सभी संभव मोर्चों पर अपनी वैचारिक लड़ाई का मार्ग निर्मित कर रही हैं, तथा दिल में परम प्रभाव तक पहुँचाने वाली सच्चाई व ईमानदारी है। ये अपने सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए रचना विधाओं की सीमित पहुँच के संसार में होते हुए भी सामान्य जनता को रचना की दुनिया में पहुँचाती हैं। गध जीवन के संग्राम की भाषा है और संघर्ष की यही भाषा लेखिकाओं की भाषा है।

नारी चेतना की परिकल्पना भले ही पश्चिम से प्रभावित है, लेकिन भारत में इसकी अपनी जड़ें मौजूद हैं। प्राचीन काल में ऋषि वात्सायन के 'कामसूत्र' से लेकर बौद्धकालीन 'थेरीगाथा' तक मध्यकाल में सीमान्तनी उपदेश से लेकर आध्यात्मिक चेतना की कवयित्री मीराबाई तक तथा आधुनिक भारत में बंग महिला की 'दुलाई वाली' से लेकर महादेवी वर्मा की 'श्रृखंला की कड़ियाँ' तक नारी चेतना का गौरवशाली इतिहास रहा है। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में नारी अधिकार और नारी मुक्ति के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठायी है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

नारी लेखन समय के सरोकार का एक ज्वलंत विषय है । लेखन संवाद और अभिव्यक्ति का माध्यम है । निःसंदेह नारीयों ने लेखन के माध्यम से अपनी दासता को खतम करने का प्रयास किया है । नारीयों को लेकर बीसवीं सदी में जैसा महादेवी वर्मा ने लिखा शायद किसीने नहीं लिखा । इनकी नारीयों में जाति के आधार को लेकर कोई भी कमी नहीं है । चाहे वह उच्च जाति की नारी हो या निम्न जाति की भाभी, बिबिया, लक्ष्मा, मुन्नू की आई दुःख सबके एक जैसे हैं । आजादी के संघर्ष में भी गांधीजी, नेहरूजी, सुभाषचंद्र आदि नेताओं के आवाहन पर जो हजारो नारीयाँ आंदोलन में आयी उनमें बहुत सी लेखिकाएँ थी जिन्होंने नारी को आत्मनिर्भरता दिलाने और उसकी राह में बिछे कांटो को दूर करने में अहम् भूमिका निभाई । भिकाइजी कामा जिन्होंने जिनीवा में 'वंदेमातरम' पत्रिका प्रकाशित की और सरोजिनी नायडू आला दर्जे की कवयित्री थीं । कमला देवी चट्टोपाध्याय, लक्ष्मी सहगल, दुर्गा भाभी, प्रीतिलता, राजकुमारी, अमृतकौर, नेली सेन गुप्ता न जाने कितनी महिलाएँ थीं जिन्होंने नारी स्थिति को सुधारने का प्रयास किया ।

उपन्यासों की दुनिया में भी नारीयों का प्रवेश होता है । कृष्णा सोबती, कुसुम अंसल, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मृदुलागर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, शिवानी, चित्रा मुदगल, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, गीतांजलिश्री, उषा प्रियंवदा, अलका सरावगी आदि लेखिकाओं नारी मुद्दों पर अपनी कलम चला रही है । महिला उपन्यास लेखिकाओं ने भारतीय नारी की समस्याओं को किस रूप में उठाया हैं, यह जानना महत्वपूर्ण है ।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति निरंतर बदलती रही है । इसलिए यह जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है आज की प्रबुद्ध नारी किस दिशा में सोच रही है । महिला लेखिका नारी के दुःख दर्द को, उसकी महत्वकांक्षाओं और आशाओं को अधिक यथार्थपरक रूप से चित्रित कर सकती है ।

आधुनिक युग में नव चेतना का प्रसार हुआ, कुछ धर्म-सुधारकों ने नारी के जीवन को दुर्दशाग्रस्त बनाने वाली प्रथाओं का उग्र रूप से विरोध किया । अनेक सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ । आर्य-समाज ने नारीयों की पुरानी रूढ़ियों को मिटाने का प्रयत्न किया । ब्रह्म समाज ने नारीयों की शिक्षा और स्वाधीनता के प्रश्न को उठाया है । भारतीय समाज में नारी प्रायः पुरुष के शोषण का शिकार रही है । पुरुष का नारी के प्रति एक ओर उपेक्षापूर्ण, क्रूर तथा कठोर दृष्टिकोण रहा है तो दूसरी ओर वह भोग की वस्तु मानी गई है । नारीयों के साथ दुर्व्यवहार के लिए पुरुष तो है ही परन्तु ऐसे भी पर्याप्त उदाहरण है जब नारी ने नारी का जीवन नरक बना दिया ।

प्रारम्भ से ही परिवार का स्वरूप सहज और सरल रहा है, परिवार मातृ व पितृ प्रधान रहा है तथा सभी पारिवारिक कार्य मिलजुल कर किये जाते थे परन्तु आज समाज में बदलाव आ गया है और मानव विकास के साथ-साथ पारिवारिक जीवन में भी बदलाव आया है । इन बदलाव के कारण आज नारी भी घर के बाहर निकलकर व्यवसाय, नौकरी आदि करने लगी है, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है । आधुनिक परिवर्तनों से पारिवारिक जीवन में लाभ हुआ है । आज समय इतना बदल गया है कि नारी जाति के उत्थान के लिए विशेष आरक्षण का प्रावधान किया है जिससे नारी-वर्ग पुरुष के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चलने लगी है ।

हिन्दी भाषा की उपन्यास विधा में भी कई सारी महिला लेखिकाओं ने नारी चेतना को उजागर करने के लिए अपनी लेखनी चलाई है । उन्होंने नारी के कई ऐसे रूपों को भी उभारा है जो अपने हक़ की माँग करती दिखाई है तो कही खुद लड़कर आगे बढ़ती दिखाई है । जो उनका एक नया रूप समाज में स्थापित कर सके इसलिए उन्होंने अपनी खुद की भी कहानी प्रस्तुत की है । उन में शिवानी, ममता कालिया, प्रभाखेतान, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुलागर्ग, चित्रामुदगल जैसी लेखिकाएँ है ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

महिला उपन्यासकार 'शिवानी' ने कई उपन्यास लिखें हैं। उन्होंने अतिथि, कालिंदी, चौदह फेरे, कृष्णकली और कैंजा जैसे उपन्यास लिखे है। उन उपन्यासों में निम्न, मध्य और उच्चवर्गीय नारीयों का वर्णन किया है। प्रथम उपन्यास 'चौदह फेरे' की नारीयाँ अपने को सबसे अलग रखकर वह आगे आना चाहती है। जो किसी के दबाव में या उन्हें कुछ कहने से नहीं पर वह अपने दम पर रहकर आगे आने की कोशिश करती दिखाई देती है। आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होने पर भी वह कोशिश करती दिखाई गई है। शिवानीजी के सभी उपन्यासों में नारी के अनेक रूप दिखाये है जो उन्हें अपनी पहचान बनाने के लिए खुद साहस और धैर्य के साथ अपनी बुलंदी को छूने का प्रयत्न करती है। शिवानीजी ने 'अतिथि' उपन्यास में 'जया' नामक मध्यवर्गीय नारी की बात की है। वह पढ़-लिखकर नौकरी करना चाहती है और अपने परिवार का नाम बढ़ाना चाहती है। जया कुछ बनने के बाद ही शादी करना चाहती थी पर उनके साथ कुछ अलग ही होता है। उनकी शादी एक उच्च वर्गीय परिवार में होती है जहाँ लड़का दारू पीता था और कई लडकियों के साथ घूमता था। फिर भी वह उसको छोड़ के कलक्टरी की परीक्षा की तैयारी करती है और उसमें पास हो जाती है। वह कभी लड़के के पास नहीं जाती खुद लड़का ही उसके पास आता है और दोनों साथ में रहतें है। यहाँ जया की अपनी स्वनिर्भरता और खुद्दारी की बात हुई है। वह कभी उनके घर की 'पांव की जूती' नहीं बनी थी।

भारत वर्ष में मध्यवर्गीय नारीयों की स्थिति तथा उसके अधिकारों पे समय-समय पर बहुत लिखा गया है, परन्तु निम्नवर्गीय परिवारों की नारीयों की समस्याओं को समझने का प्रयास न के बराबर हुआ है। हमारे देश में नारीयों का एक बड़ा वर्ग जो मेहनत-मजदूरी करके अपना निर्वाह करती है। प्रायः निम्नवर्गीय परिवार में यह देखा गया है की नारी मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करती है, क्योंकि निम्नवर्गीय परिवार में पुरुष परिवार के पालन-पोषण का ध्यान नहीं रखता, वह तो केवल पत्नी को चक्की समझ कर कार्य करवाता है। वह समझता है कि विवाह कर दिया यही उसका सबसे बड़ा एहसान नारी पर है परन्तु बेचारी नारी अपने पति की दिन-रात सेवा करती है। उसे यह भय रहता है कि कहीं उसका पति उसे घर से न निकाल दें। इसी कारण बेचारी नारी रात-दिन मेहनत करके अपने पति तथा बच्चों का निर्वाह करती है। यह सब निम्नवर्गीय परिवार में मुख्यतः अनपढ़ता के कारण है तथा आज भी गाँवों में अनपढ़ता जारी है।

समाज में मध्यवर्गीय परिवार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह वर्ग एक ओर स्पर्धा के लिए उच्च वर्ग की ओर देखता है तो दूसरी ओर निम्नवर्ग से भी जुड़ा रहता है। महिला लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय नारीयों के जीवन संघर्ष, दुर्बलताएं, चारित्रिक वैशिष्ट्य और बहुआयामी समस्याओं को स्पष्ट किया है। मध्यवर्गीय नारीयाँ एक नवीन दृष्टिकोण को लेकर आई हैं। वे अपने आर्थिक निर्भरता के साथ ही अपने वजूद के प्रति भी सचेत दिखाई देती हैं। वे पुरुष की पराधीनता से मुक्ति के लिए आत्मनिर्भरता को आवश्यक मानती हैं।

'चौदह फेरे' उपन्यास की मद्धा, ननिबाला, अहल्या, सावित्री, नंदी और मालिनी जैसी नारी पात्रों का चित्रण शिवानी जी ने किया है। वो नारीयाँ भी एक माँ, बहू, पत्नी और बेटी के रिश्ते को बखूबी निभाने की कोशिश करती दिखाई देती है। इस उपन्यास की 'मद्धा' नामक नारी आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण ही आजीवन अपनी मालकिन की सेवा करती हुई दिखाई देती है। वह अपनी मालकिन के सुखी एवं जवान दिनों में उसके साथ रही थी तो वह बुरे यानि बुढ़ापे के दिनों में भी मालकिन की भरपूर सेवा करती है। 'ननिबाला' कर्नल की बेटी अहल्या की नौकरानी है और वह अपने इस काम से मिलने वाले कम पैसे से असंतुष्ट है इसलिए वह दूसरा काम भी करती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

'कालिंदी' उपन्यास में शिवानीजी ने 'अन्नपूर्णा' के माध्यम से मध्यवर्गीय नारी के आत्मद्वन्द को बड़ी सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। आर्थिक रूप से पराश्रित होने के कारण ही ससुराल में नानाविध यातनाओं को झेलना पड़ता है। ससुराल वाले उसे हर बात पर मारते हैं जिससे उसके सारे शरीर पर निशान पड़ जाते हैं। इसके पश्चात् उसका पति कुछ दहेज़ और पाने की लालच में उसे उसके मायके छोड़ आता है। फिर वह अपने मायके रहकर ही बेटी को जन्म देती है। बेटी भी अपने पैरों पे खड़ी होती है। माँ को मददरूप होती है। शिवानीजी ने यह स्पष्ट किया है कि मध्यवर्गीय नारी को किस तरह पूरी उम्र सामाजिक कुरीतियों एवं विषमताओं को चुनौती देते हुए जीना पड़ता है।

ममता कालिया ने एक पत्नी के नोट्स, लड़कियाँ, प्रेम कहानी, दौड़ जैसे उपन्यासों के माध्यम से नारी का बहुत ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों की नारी हमेशां अपने परिवार, बच्चों और खुद की बीमारी से लड़ती नजर आई है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में नारी की आर्थिक सद्धरता, सेक्स की कामुकता के लिए तरसती, प्रेमविवाह होने के बावजूद भी प्रेम नहीं पाने की विवशता, स्वावलंबी, स्वनिर्भरता के साथ जीती हुई, पीड़ा, शोषण और चिकित्सालयों में फैले भ्रष्टाचार, अन्याय, अनियमितता और क्रूरता की ओर इशारा किया है। 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता, 'लड़कियाँ' की पूजा तथा 'प्रेम कहानी' की जया तीनों उपन्यासों की नारियाँ सीधी-सादी है और वह स्वनिर्भर होकर ही रहना चाहती है।

प्रभा खेतानजी के 'आओ पेपे घर चले', 'तालाबंदी', 'एड्स', 'पीली आंधी' और 'छिन्नमस्ता' उपन्यास है। नारी विमर्श की प्रखर चिन्तक और उपन्यासकार प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' उपन्यास स्त्री के शोषण, उत्पीड़न और संघर्ष का जीवंत दस्तावेज है। संपन्न मारवाड़ी समाज की पृष्ठभूमि में रची गई इस औपन्यासिक कृति की नायिका 'प्रिया' है। बचपन से ही भेदभाव और उपेक्षा की शिकार साधारण शक्ल-सूरत और सामान्य बुद्धि की 'प्रिया' परिवार की 'सुरक्षित' चौहद्दी के भीतर ही यौन शोषण का शिकार भी होती है और तदुपरान्त प्रेम और भावनात्मक सुरक्षा की तलाश में उन तमाम आघातों से दो-चार होती है जिनसे संभवतः हर स्त्री को गुजरना होता है। अपने जड़ संस्कारों में जकड़ा पति भी उसे मानवोचित सम्मान नहीं दे पाता। इस सबके बावजूद प्रिया अपनी एक पहचान और वह अपना स्वतंत्र तथा सफल व्यवसाय स्थापित करती है।

मैत्रेयी पुष्पाने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जीवन शैली का सभ्य समाज द्वारा शोषित, घृणित एवं अपराधिक पृष्ठभूमि को प्रकाशित किया है। अल्मा के चरित्र के माध्यम से नारी की सहनशक्ति, बुद्धिमत्ता एवं विवेकशीलता का भी परिचय दिया है। शोषण कैसा भी हो शोषण ही है और शोषण का सामना करने का हर एक मार्ग अलग-अलग है।

मृदुलागर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब' में नारी जीवन तथा उसके संघर्षों को लेकर लिखा गया है। 'कठगुलाब' उपन्यास के नारी पात्रों में स्मिता, मारियान, नर्मदा और असीमा है जो निरंतर हो रहे शोषण से उबकर प्रतिशोध एवं विद्रोह की भावना से भरी रहती है। इस उपन्यास का कथानक समाज में व्याप्त नारी शोषण, अन्याय तथा स्त्रियों के विभिन्न संघर्षों को प्रस्तुत करता है। समाज में पुरुष द्वारा किस प्रकार से नारी का शोषण कर उसे सताया एवं उसका उपयोग करके फेंक दिया जाता है, यह उन्हीं औरतों की कहानी है। इस उपन्यास के केंद्र में स्त्री और उसकी विविध समस्याओं को रखा गया है।

निष्कर्षतः कहा जाता है कि कालिंदी, अतिथि, चौदह फेरे, एक पत्नी के नोट्स, लड़कियाँ, प्रेमकहानी, छिन्नमस्ता, अल्मा कबूतरी और कठगुलाब उपन्यासों की नारी पात्रों के माध्यम से इन सभी उपन्यासों की लेखिकाओंने जिस तरह से वो नारियाँ को अपने संघर्ष के लिए लड़ती, स्वाभिमानी और शोषण के विरुद्ध आवाज

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

उठाती हुई दिखाई है। ठीक उसी तरह आज की वर्तमान नारी को भी खुद में जागरूकता लाना, शोषण विरुद्ध आवाज उठाना, शिक्षा क्षेत्र में भी अपना कदम आगे बढ़ाकर समाज, परिवार और देश की नारीयों में भी जागरूकता लाना है।

संदर्भ सूचि:

[1]. महिला सशक्तिकरण और भारत, राकेश कुमार आर्य, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०२०

[2]. नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य, प्रीति त्रिवेदी, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : २०१४

[3]. महिला उपन्यासकार एवं उनके नारी पात्र, डॉ दीनदयाल वर्मा, आर्य पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०१०

[4]. अतिथि, शिवानी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण : २०१६

[5]. तीन लघु उपन्यास (एक पत्नी के नोट्स, लड़कियाँ, प्रेम कहानी),ममता कालिया, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : २०२०

[6]. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली, प्रथम. सं. संस्करण : १९९३, दूसरा.सं. २००९

[7]. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०००, छठा. सं. २०१६

[8]. कठगुलाब, मृदुलागर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, आँठवा.संस्करण, २०१९